International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सरदार अजीत सिंह के विचारों में राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद

संजीता[1] डॉ विनय कुमार पाठक[2]

[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर

[2]प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर

सार

इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेता सरदार अजीत संह द्वारा कल्पना की गई राष्ट्र और राष्ट्रवाद की अवधारणा का पता लगाना और उसका वश्लेषण करना है। सरदार अजीत संह ने लोगों को संगठित करने और भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। उनके भाषणों, लेखों और राजनीतिक गति व धयों की जांच करके, यह पेपर राष्ट्रीयता, एकता और स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय प्राप्त करने में राष्ट्रवाद की भू मका पर उनके दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करता है। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर सरदार अजीत संह के वचारों का व्यापक वश्लेषण प्रदान करने के लए अध्ययन प्राथ मक और माध्य मक स्रोतों पर आधारित होगा।

मुख्य शब्द: सरदार अजीत संह, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्र, राष्ट्रवाद, एकता, सामाजिक न्याय

प्रस्तावना

सरदार अजीत संह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अद्भुत क्रांतिवीर थे और ब्रिटिश औपनिवे शक शासन से भारत की आजादी के आंदोलन में एक प्रमुख नेता थे। जब क उन्हें अक्सर क्रांतिकारी गति व धयों के आयोजन में उनकी भू मका के लए याद कया जाता है, राष्ट्र और राष्ट्रवाद की अवधारणा पर उनके वचार स्वतंत्र और एकजुट भारत के उनके दृष्टिकोण से गहराई से प्रभा वत थे। सरदार अजीत संह एक राष्ट्र के वचार में एक सामूहिक इकाई के रूप में वश्वास करते थे जो धर्म, जाति और क्षेत्र के संकीर्ण वभाजन से परे थी। उन्होंने एक अखंड भारत की कल्पना की जहां व भन्न पृष्ठभू म के लोग न्याय, समानता और स्वतंत्रता के सद्धांतों पर आधारित एक सामंजस्यपूर्ण समाज बनाने के लए एक साथ आएंगे। सरदार अजीत संह के लए, राष्ट्रवाद कसी एक वशेष समूह या समुदाय के हितों को बढ़ावा देने के बारे में नहीं था, बल्कि एक एकजुट राष्ट्र के निर्माण के बारे में था जो अपने सभी नागरिकों के अ धकारों और आकांक्षाओं का सम्मान और सुरक्षा करता था। उन्होंने औपनिवे शक शासन को चुनौती देने और स्वतंत्रता के एक सामान्य लक्ष्य की दिशा में काम करने के लए, अपने मतभेदों की परवाह कए बिना, भारतीयों के बीच एकता और एकजुटता की आवश्यकता पर जोर दिया। सरदार अजीत संह की राष्ट्रवादी वचारधारा सामाजिक न्याय के वचार

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

से गहराई से जुड़ी हुई थी। उन्होंने भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी असमानताओं को पहचाना और उपनिवेशवाद के खलाफ लड़ाई को इन सामाजिक बुराइयों को दूर करने और मटाने के अवसर के रूप में देखा। उन्होंने एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज के महत्व पर जोर दिया जहां प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और अ धकार हों।

सरदार अजीत संह की राष्ट्र की अवधारणा

सरदार अजीत संह की राष्ट्र की अवधारणा की वशेषता एकजुट और समावेशी भारत की उनकी दृष्टि थी। उनकी समझ के केंद्र में देश के व भन्न समूहों के बीच एकता और एकजुटता का वचार था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया क कसी राष्ट्र की ताकत धर्म, जाति या क्षेत्र के आधार पर वभाजन को पार करने की क्षमता में निहित है। सरदार अजीत संह के लए, राष्ट्र एक सामूहिक इकाई थी जिसमें सभी नागरिक शा मल थे, चाहे उनकी पृष्ठभू म कुछ भी हो। उन्होंने समाज को खं डत करने वाले वभाजनकारी कारकों की धारणा को दृढ़ता से खारिज कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने एक ऐसे राष्ट्र की वकालत की जो अपने लोगों की व वधता का सम्मान करता हो और उसे महत्व देता हो। राष्ट्रवाद की उनकी अवधारणा ने मतभेदों के बावजूद सभी नागरिकों के लए समावे शता और समान अ धकारों पर जोर दिया। उनका मानना था क एक एकजुट राष्ट्र का निर्माण केवल व्यक्तियों को एक साथ बांधने वाले सामान्य बंधनों को पहचानकर और एकता की भावना को बढ़ावा देकर ही कया जा सकता है। सरदार अजीत संह की राष्ट्र की अवधारणा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खलाफ संघर्ष से गहराई से जुड़ी हुई थी। उन्होंने औपनिवे शक शासन को भारतीय राष्ट्र की प्रगति और एकता में बाधा के रूप में देखा। उनका मानना था क वदेशी प्रभुत्व से भारत की मुक्ति राष्ट्र के लए अपनी नियति निर्धारित करने और अपने भ वष्य को आकार देने के लए महत्वपूर्ण थी। इसके अलावा, सरदार अजीत संह की राष्ट्रीयता की दृष्टि में सामाजिक न्याय और समानता की खोज शा मल थी। उन्होंने भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी असमानताओं, जैसे जातिगत भेदभाव और आ र्थक असमानताओं को पहचाना और उनके उन्मूलन का आह्वान कया। उनका मानना था क राष्ट्र की प्रगति और एकता के लए एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज आवश्यक है।

सरदार अजीत संह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, जो भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण क्षण था। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर उनके वचारों की जांच करके, हम उस समय के बौ द्धक और वैचारिक परिदृश्य में अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं, स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सामना की गई प्रेरणाओं, आकांक्षाओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालते हैं। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर उनके वचारों को समझने से हमें उनकी नेतृत्व शैली, रणनीतिक निर्णयों और व भन्न समूहों को एक सामान्य उद्देश्य के लए एकजुट करने के लए अपनाए गए तरीकों का वश्लेषण करने की अनुमति

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

मलती है। यह ज्ञान समकालीन नेताओं और सामाजिक आंदोलनों के लए मूल्यवान सबक प्रदान कर सकता है। उनके वचार भारतीय संदर्भ में राष्ट्र और राष्ट्रवाद की अवधारणा के वकास और वकास में योगदान देते हैं। एकता, समावे शता और सामाजिक न्याय पर उनके दृष्टिकोण एक राष्ट्र की पहचान और आकांक्षाओं को समझने और आकार देने के लए वैकल्पिक रूपरेखा और दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। इस तरह की वैचारिक अंतर्दृष्टि वश्व स्तर पर राष्ट्र-निर्माण प्र क्रयाओं के बारे में हमारी समझ को व्यापक बनाने में मदद करती है। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर सरदार अजीत संह के वचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भीतर व वध दृष्टिकोणों का प्रतिनि धत्व करते हैं। हालाँ क उन्होंने एकता और एकजुटता पर जोर दिया, ले कन उनके वचार एकांगी नहीं थे। उनकी वचारधारा का अध्ययन करने से हमें उन आवाजों, दृष्टिकोणों और रणनीतियों की बहुलता की सराहना करने की अनुमति मलती है जिन्होंने राष्ट्र-निर्माण प्र क्रयाओं की जटिलता को उजागर करते हुए बड़े राष्ट्रवादी आंदोलन में योगदान दिया। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर सरदार अजीत संह के वचारों का अध्ययन ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो समकालीन समय में भी प्रासं गक बनी हुई है। राष्ट्रीयता, पहचान, सामाजिक न्याय और समावेशी शासन के मुद्दे अभी भी वश्व स्तर पर प्रासं गक हैं। सरदार अजीत संह जैसे ऐतिहा सक शख्सियतों की जांच करके, हम समानताएं बना सकते हैं और ऐसे सबक प्राप्त कर सकते हैं जो समकालीन चर्चाओं और नीतियों को सू चत और आकार दे सकते हैं। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर उनके वचार व्यक्तियों और समुदायों के लए प्रेरणा और सशक्तिकरण के स्रोत के रूप में काम कर सकते हैं। समानता और स्वतंत्रता के सद्धांतों पर आधारित न्यायपूर्ण और एकजुट भारत का उनका दृष्टिकोण लोगों को सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय वकास की खोज में स क्रय रूप से शा मल होने के लए प्रेरित कर सकता है।

सरदार अजीत संह के वचारों का राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर प्रभाव व भन्न आयामों में देखा जा सकता है। उनके वचारों और योगदानों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उसके बाद के राष्ट्रवादी आंदोलनों पर एक अ मट छाप छोड़ी है। लामबंदी और एकता सरदार अजीत संह ने औपनिवे शक शासन के खलाफ लड़ाई में व भन्न समूहों के बीच एकता और एकजुटता के महत्व पर जोर दिया। उनके वचारों ने लोगों को एकजुट करने और राष्ट्रीय चेतना की भावना पैदा करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। एकता के लए उनका आह्वान जनता के बीच गूंज उठा और राष्ट्रवादी उद्देश्य के लए समर्थन जुटाने में मदद मली। उनकी वचारधारा ने ब्रिटिश शासन के खलाफ क्रांतिकारी गति व धयों के लए प्रेरणा प्रदान की। आत्मनिर्णय और सशक्तिकरण में उनके वश्वास ने कई युवा कार्यकर्ताओं को स्वतंत्रता के संघर्ष में शा मल होने के लए प्रेरित कया। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर उनके वचारों ने औपनिवे शक सत्ता को चुनौती देने में क्रांतिकारी समूहों के गठन और उनकी रणनीतियों को प्रभा वत कया। सरदार अजीत संह की सामाजिक न्याय और समानता के प्रति प्रतिबद्धता का राष्ट्रवादी वमर्श पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

असमानताओं को पहचाना और हा शए पर मौजूद वर्गों के उत्थान की वकालत की। सामाजिक अन्याय को संबो धत करने पर उनके जोर ने सामाजिक सुधार के लए बाद के आंदोलनों और भारतीय राष्ट्रवादी एजेंडे में सामाजिक न्याय सद्धांतों को शा मल करने को प्रभा वत कया। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर सरदार अजीत संह के वचारों का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के बाद के नेताओं पर स्थायी प्रभाव पड़ा। सरदार अजीत संह के वचारों की वरासत आजादी के बाद के कई नेताओं की नीतियों और वचारधाराओं में देखी जा सकती है। धा र्मक, जाति और क्षेत्रीय वभाजनों से परे, सरदार अजीत संह के एकजुट भारत के दृष्टिकोण ने राष्ट्रीय एकता के वचार में योगदान दिया। एकता पर उनका जोर भारत के वभाजन के दौरान एक मार्गदर्शक सद्धांत के रूप में काम आया, जिससे उन प्रबुद्ध व्यक्तित्वों को सहारा मला जो भारतीय संघ में रियासतों के एकीकरण की दिशा में काम कर रहे थे। राष्ट्र और राष्ट्रवाद पर सरदार अजीत संह के वचारों ने भारतीय राष्ट्रवाद पर चर्चा में बौ द्धक गहराई जोड़ दी। राष्ट्रवाद, आत्मनिर्णय और सामाजिक न्याय पर उनके वचारों ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन को समझने के लए एक व्यापक ढांचे के वकास में योगदान दिया। वद्वानों और इतिहासकारों ने स्वतंत्रता संग्राम की जटिलताओं का वश्लेषण और व्याख्या करने के लए उनके लेखन और भाषणों का सहारा लया है।

निष्कर्ष

राष्ट्र और राष्ट्रवाद की अवधारणा पर सरदार अजीत संह के वचार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्र भारत के दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण थे। राष्ट्रवाद की उनकी समझ में एकता, एकजुटता और धर्म, जाति और क्षेत्र जैसे वभाजनकारी कारकों की अस्वीकृति पर जोर दिया गया। उन्होंने देखा क एक राष्ट्र की ताकत इन वभाजनों को पार करने और सभी नागरिकों के लए समावे शता और समान अ धकारों की भावना को बढ़ावा देने की क्षमता में निहित है। सरदार अजीत संह की राष्ट्र की अवधारणा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खलाफ संघर्ष से निकटता से जुड़ी हुई थी, क्यों क उनका मानना था क राष्ट्र को अपनी नियति निर्धारित करने और अपने भ वष्य को आकार देने के लए भारत की मुक्ति महत्वपूर्ण थी। आत्मनिर्णय पर उनके जोर ने भारतीय राष्ट्र को खुद पर शासन करने और अपने लोगों को लाभ पहुंचाने वाले निर्णय लेने की अनुमति देने के महत्व पर प्रकाश डाला। इसके अलावा, सरदार अजीत संह के वचारों में सामाजिक न्याय और समानता की खोज शा मल थी। उन्होंने भारतीय समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी असमानताओं को पहचाना और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 02, Feb- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

राष्ट्र की प्रगति और एकता सुनिश्चित करने के लए एक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत समाज की आवश्यकता पर बल देते हुए उनके उन्मूलन का आह्वान कया। उनका दृष्टिकोण जनता के सशक्तिकरण और राष्ट्र निर्माण प्र क्रया में उनकी स क्रय भागीदारी पर भी केंद्रित था। उनका मानना था क राष्ट्र की मजबूती और वकास के लए लोगों की सामूहिक शक्ति और एजेंसी आवश्यक है।

सदर्भ ग्रन्थ सूची

1. दास गुप्ता, ए. **(2003)** सरदार अजीत संह, भारतीय राष्ट्रवाद और क्रांतिकारी आतंकवाद। आधुनिक ए शयाई अध्ययन, **37(4), 925-958**

2. घोष, एस. **(1971)** सरदार अजीत संह भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रदूत। नेशनल पब्लि शंग हाउस

3. जलील, ए. **(2008)** सरदार अजीत संह और गदर आंदोलन। इकोनॉ मक एंड पॉ लटिकल वीकली, **43(14), 67-73.**

4. कपूर, ए. **(2003)** सरदार अजीत संह और स्वतंत्रता आंदोलन। एस चंद एंड कंपनी

5. पांडे, के. **(1992)** सरदार अजीत संहरू एक भूले हुए नेता। राष्ट्रीय पुस्तक संगठन

6. रल्हन, ओ.पी. **(2003)** सरदार अजीत संहरू एक अद् वतीय देशभक्त अनमोल प्रकाशन

7. परदमन संह एंड ज.स. धनकी **(1984),** बुरिएड अलाइव रू ऑटोबायोग्राफी, स्पीचेस एंड रइटिंग्स ऑफ अन इं डयन रेवोलुशनरी सरदार अजित संह, नई दिल्ली

8. चरोल **(1910),** इं डयन उनरेस्ट , लंदन

9. सत्य म. राइ, **(1978)** पंजाबी हीरोइक ट्रे डशन , **1900-1947** पटिआला

10. अजित संह व्याख्यान , अपेन्डेड टू हिस्ट्री शीट, डस्टर्बेंसेस फाइल य अजित संह, ऑटोबायोग्राफी

11. जमींदार, **24** मार्च **1907** सेलेक्शंस फ्रॉम द पंजाब वर्नाकुलर प्रेस **1907**